एस्केलेटर

मां जब व्यस्त थी काम में
दादी ने झुलाया झूलना।
नन्हीं गुड़िया ने रखा
दरवाजे से बाहर कदम
दादी की उंगली पकड़कर।
कब आई उसे नींद
दादी की लोरी सुने बिन।
जाड़े की लंबी रातें और
दादी की नरम–नरम कहानियां।
छोटी–छोटी जिद और
दादी की अठन्नी के साथ प्यारी सी डांट।
एक दिन,
निकली घर से बाहर
देखी दुनिया
रंगीन, खुशनुमा, हजार रंग
बढ़ गई आगे...।
आज पांच साल की गुड़िया
अपना फर्ज निभा रही है,
मॉल में दादी को एस्केलेटर पर चढ़ना सिखा रही है,
ना, तीन पीढ़ियों के बीच की दूरी मिटा रही है।

–तसलीम